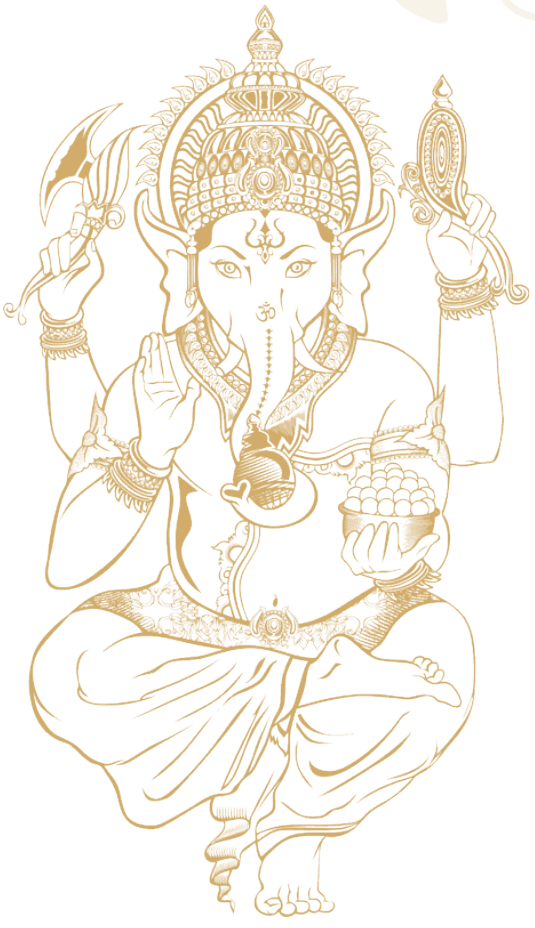

Mr.yougansh

Sakshi sharma

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120768702

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
03/02/1997	जन्म तिथि	3-04/11/1996
सोमवार	दिन	रवि-सोमवार
घंटे 22:05:00	जन्म समय	06:09:00 घंटे
घटी 37:21:18	जन्म समय(घटी)	58:55:12 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:08:28	सूर्योदय	06:34:55
18:00:58	सूर्यास्त	17:34:21
23:49:01	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:47

विंशोत्तरी बुध 4वर्ष 4मा 2दि शुक्र 07/06/2008 07/06/2028		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी बुध 5वर्ष 6मा 14दि शुक्र 19/05/2009 19/05/2029	
शुक्र	08/10/2011	14:51:54	कन्या	लग्न	तुला	11:33:45	शुक्र	18/09/2012
सूर्य	07/10/2012	21:04:46	मक	सूर्य	तुला	18:03:40	सूर्य	18/09/2013
चन्द्र	08/06/2014	26:35:45	वृश्चि	चंद्र	कर्क	25:39:22	चन्द्र	20/05/2015
मंगल	08/08/2015	12:04:20	कन्या	मंगल	सिंह	08:47:27	मंगल	19/07/2016
राहु	08/08/2018	28:27:42	धनु	बुध	तुला	19:19:15	राहु	20/07/2019
गुरु	08/04/2021	09:14:47	मक	गुरु	धनु	19:28:57	गुरु	20/03/2022
शनि	07/06/2024	06:48:57	मक	शुक्र	कन्या	12:52:22	शनि	19/05/2025
बुध	08/04/2027	05:54:23	मीन	शनि व	मीन	07:32:55	बुध	19/03/2028
केतु	07/06/2028	05:54:23	कन्या व	राहु	कन्या	13:40:50	केतु	19/05/2029
		11:24:05	मीन व	केतु	मीन	13:40:50		
		04:16:37	मक	हर्ष	मक	07:05:40		
		11:28:19	मक	नेप	मक	01:23:16		
			वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	08:21:53		

लग्न-चलित

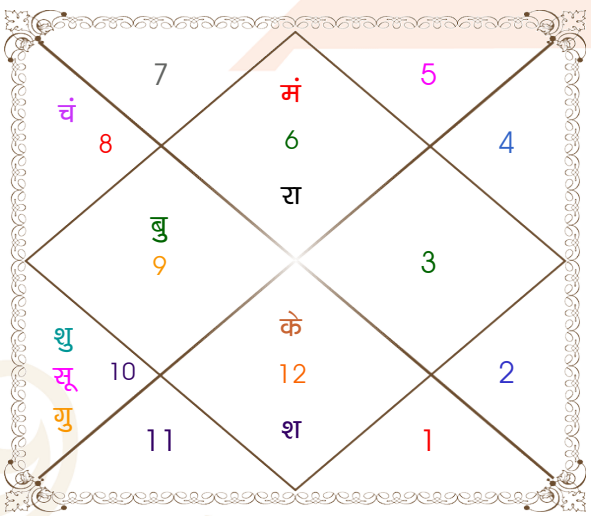

लग्न-चलित

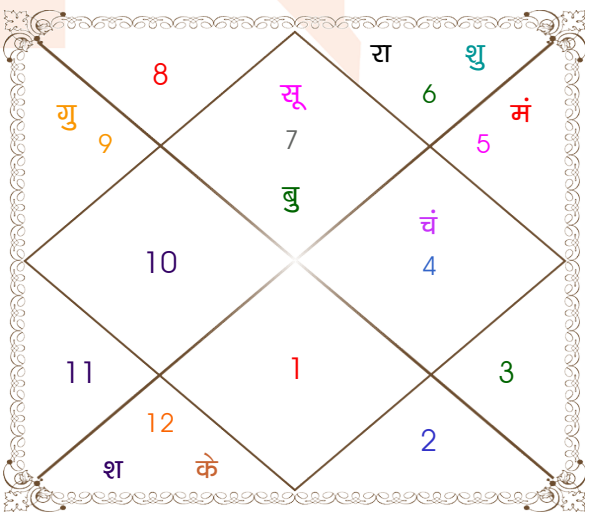

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मृग	मार्जार	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	चन्द्र	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	कर्क	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	25.00		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

डतण्लवनहंदी का वर्ग मृग है तथा ँीप ॅितउं का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्लवनहंदी और ँीप ॅितउं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्लवनहंदी मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु डतण्लवनहंदी कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

ँीप ॅितउं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि ँीपॅीतउं कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्लवनहंदी तथा ँीपॅीतउं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।